होने के कारण व्यासदेव भी अर्जुन के समान प्रामाणिक हैं। संजय इन्हीं का शिष्य है। व्यासदेव की कृपा से उसकी इन्द्रियाँ शुद्ध हो गयीं, जिससे वह साक्षात् श्रीकृष्ण को सुन-देख सका। जो साक्षात् श्रीकृष्ण को सुनता है, वह इस रहस्यमय ज्ञान को जान सकता है। शिष्यपरम्परा का आश्रय ग्रहण किए बिना श्रीकृष्ण को कोई नहीं सुन सकता; अतः उसका ज्ञान, कम से कम जहाँ तक भगवद्गीता का सम्बन्ध है, सदा अपूर्ण रहता है।

भगवद्गीता में कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग, आदि सब योग-पद्धतियों का वर्णन है। श्रीकृष्ण इन सब योगों के परम ईश्वर हैं। स्मरण रहे कि जैसे अर्जुन को साक्षात् श्रीकृष्ण से उनका तत्त्व जानने का सौभाग्य मिला, वैसे संजय भी गुरु व्यासदेव की कृपा से श्रीकृष्ण के वचनामृत का साक्षात् पान कर सका। वास्तव में व्यास जैसे प्रामाणिक गुरु के माध्यम से सुनना साक्षात् भगवान् श्रीकृष्ण से सुनना है। अतः गुरु को व्यासदेव का प्रतिनिधि माना जाता है। वैदिक परम्परा के अनुसार गुरुदेव के आविर्भाव-दिवस पर शिष्यगण उनके सम्मान में व्यास-पूजा महोत्सव का आयोजन करते हैं।

राजन्संस्मृत्य संस्मृत्य संवादमिममद्भुतम्।
केशवार्जुनयोः पुण्यं हृष्यामि च मुहुर्मुहुः।।७६।।

राजन् =हे राजन्; **संस्मृत्य-संस्मृत्य** =बारंबार स्मरण करके; **संवादम्** =वार्तालाप को; **इमम्** =इस; **अद्भुतम्** =अद्भुत; **केशव-अर्जुनयोः** =भगवान् श्रीकृष्ण तथा अर्जुन के; **पुण्यम्** =पावन; **हृष्यामि** =हर्षित (रोमांचित) होता हूँ; **च** =और; **मुहुः मुहुः** = =प्रतिक्षण।

अनुवाद

हे राजन ! श्रीकृष्ण और अर्जुन के इस परम अद्भुत और पावन संवाद को बारम्बार स्मरण करके मैं प्रतिक्षण हर्षित और रोमांचित हुआ जाता हूँ।।७६।।

तात्पर्य

भगवद्गीता का ज्ञान इतना दिव्य है कि जो कोई अर्जुन और श्रीकृष्ण के संवाद को भलीभाँति हृदय में धारण करता है, वह सत्परायण हो जाता है और इस संवाद की स्मृति को हृदय से क्षणभर के लिए भी नहीं निकाल सकता। उसे शुद्ध सत्त्वमयी दिव्य अवस्था प्राप्त हो जाती है। भाव यह है कि जो यथार्थ स्रोत से, अर्थात् साक्षात् श्रीकृष्ण से गीता का श्रवण करता है, वह पूर्ण कृष्णभावनाभावित हो जाता है। उसका अन्तस्तल दिव्य आलोक में जगमगा उठता है। ऐसा पुरुष जीवन के पल-पल में आनन्द-विभोर रहता है।

तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपमत्यद्भुतं हरेः।
विस्मयो मे महान् राजन् हृष्यामि च पुनः पुनः।।७७।।

तत् =उसको; **च** =भी; **संस्मृत्य-संस्मृत्य** =बारंबार स्मरण करके; **रूपम्** =रूपको;